जीवन की सार्थकता

नदी में ज्वार भाटा आता है और मनुष्य के मन में उमंग और निराशा आती है। मनुष्य की ऐसी स्थिति क्यों है? क्यों वह उमंग में आता है, उत्साह में आता है और फिर बिल्कुल ठंडा पड़ जाता है, उत्साह हीन हो जाता है। इसका कारण शायद यह हो सकता है कि वह आशा के झूले में झूलता रहता है और जहाँ आशा की पूर्त्ति का कोई साधन नहीं पाता वहाँ वह फिर निराश हो जाता है। जीवन में कितनी ही घड़ियाँ ऐसी आती हैं कि मनुष्य प्रसन्न भी होता है और उदास भी होता है।

मनुष्य की जो वृत्तियाँ हैं इनका उतार-चढ़ाव होता रहता है। तीन वृत्तियाँ कही जाती हैं। तमोगुणी, रजोगुणी, सतोगुणी। सतोगुणी वृत्ति जो है वह तो शान्त है, तमोगुणी जो है उसमें अनेक प्रकार का उपद्रव है और रजोगुणी वृत्ति जो है वह कार्य में लीन होने के लिये उत्साह दिलाती है। जब मनुष्य आशा और निराशा के झूले में झुलने लगता है, तब उसके लिये कोई मार्ग तो होना चाहिये। इसके लिये भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है कि हे अर्जुन! तुम त्रिगुणातीत हो जाओ। यानी ये जो तीन गुण हैं – तामसिक, राजसिक, सात्विक – ये तुझ पर कोई भी असर न डाल सके। तेरा जीवन कुछ ऐसा हो कि ये वृत्तियाँ रहें, लेकिन तुझ पर असर न कर सके तुम ऐसे त्रिगुणातीत हो जाओ।

यह कहना कठिन है कि त्रिगुणातीत मनुष्य कैसे होगा, किस तरह हो पायेगा। कुछ बातें धार्मिक पुस्तकों में बड़े रोचक ढंग से बड़ी समझदारी

और नीति के हिसाब से लिखी गयीं किन्तु लिखनेवाले ने कभी यह नहीं सोचा कि मनुष्य का जो जीवन है वह एक विचित्र पहेली जैसा है। न वह आदि जानता है कि कहाँ से आया है और न वह यह जानता है कि जायेगा कहाँ। एक ऐसी बात कह दी कि शुभ कर्म करेगा तो स्वर्ग मिलेगा और अशुभ कर्म करेगा तो नरक मिलेगा; तो यह तो मनुष्य को भ्रम में डालना है। क्या शुभ है और क्या अशुभ – यह भी कहना कठिन है। वह आदि नहीं जानता न वह अन्त समझता है और मध्य में वह ऐसे कर्मों में शुभ-अशुभ के सोच में – लीन रहता है कि उसे उस सर्वव्यापी भगवान के लिये समय ही नहीं मिलता। ऐसी अवस्था में मनुष्य करे तो क्या करे।

मनुष्य को कुछ आधार लेना होगा विचारों का। ये विचार यदि उत्साह वर्धक हैं तो उसका जीवन सुखद होगा और यदि ये विचार मनुष्य को उत्साह नहीं देते हैं तो उसका जीवन कभी सुखमय नहीं हो सकता। एक आधी भरी हुयी बोतल को देखकर एक व्यक्ति कहता है यह अभी आधी भरी है तो पूरी भी भरी जायेगी, दूसरी तरफ दूसरा व्यक्ति बोलता है यह तो आधी ही भरी हुयी है इसकी क्या कीमत है, यह निरर्थक है। तो आप देखें कि एक ही वस्तु को देखकर भिन्न मति रखनेवाले दो व्यक्ति – उमंग और निराशा – दो भिन्न भावना साथ में लेकर के चल रहे हैं।

हमारा जीवन कैसा है; यह मनुष्य को खुद सोचना पड़ेगा। दूसरे के जीवन से केवल अपनी तुलना करने से जीवन कुछ उत्तम होगा – यह एक निराशाजनक बात है। मनुष्य को अपने पैरों पर खड़े होकर के काम करना पड़ता है और जैसे उसके विचार होते हैं उसी के अनुसार उसका जीवन बनता है। मनुष्य जीव के रूप में आया, अब उसके सम्मुख यह प्रश्न आया

कि तेरा जीवन कैसे बने। तू किस प्रकार शान्ति से रह सके, किस प्रकार उमंग उत्साह से अपना जीवन व्यतीत कर सके। वहाँ कुछ लोग जो हैं वे चिन्तन में लगते हैं और दूसरी ओर कुछ लोग ऐसे भी हैं जो चिन्तन में नहीं लगते बल्कि कुछ ऐसे काम-धाम में लग जाते हैं कि उनको समझ ही नहीं आता कि जीवन मिला है तो आखिर किस लिये मिला। वे इस जीवन की उपादेयता बस इतनी ही समझते हैं कि अधिक से अधिक धन कमाया जाये और धन कमाते-कमाते जन्म गँवाया जाये। यह जन्म गँवाया जाये यह तो हम कहते हैं, किन्तु वे यही कहेंगे कि अन्तिम समय तक इसी गोरख धन्धे में अपना जीवन बिता दिया जाये।

हम किसी को उपदेश देने की बात नहीं कहेंगे। हमको तो एक बात कहनी है कि हम स्वयं अपने जीवन को देखें और समझें कि हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है? लक्ष्य की तरफ केवल देखने मात्र से काम नहीं चलेगा, हमें देखना होगा हमारा आधार क्या है? उच्च लक्ष्य होगा – साधन नहीं, आधार नहीं तो उस अवस्था में वह उच्च लक्ष्य कथन मात्र के लिये है। सम्मुख कोई ऐसी चीज नहीं, जो उसके उत्साह का वर्धन कर सके तो कुछ ऐसा करना होगा जिससे कि उसका जीवन उत्साह पूर्ण बन सके। यह नहीं कहा जाता कि मनुष्य धन उपार्जन न करे किन्तु धन उपार्जन ही मनुष्य के जीवन का अन्तिम लक्ष्य है, यह कदापि ठीक नहीं।

मैं समझता हूँ कि मनुष्य की लालसा, भगवान की लालसा से भी अधिक है। भगवान ने तो केवल दुनिया बना करके विश्राम ले लिया लेकिन मनुष्य तो दुनिया में आकर के विश्राम लेना ही नहीं चाहता। उमंग भरी बातें सुन करके कुछ समय के लिये, उमंग की भावना आती है किन्तु साधन न

हो, यदि आधार न हो तो वह उमंग की भावना ठहरेगी किस पर। आपने एक वस्तु खरीदी और आपका कोई घर न हो – आप रखेंगे कहाँ उसको? तो मनुष्य को जीवन बनाने के लिये, बिताने के लिये एक घर चाहिये, एक आधार चाहिये, एक मन्दिर चाहिये, भाव का मन्दिर चाहिये। जब तक मनुष्य को भाव का मन्दिर नहीं मिलेगा, तब तक वह चाहे कितने ही मन्दिरों में चक्कर काटता रहे उसे शान्ति नहीं मिल सकती।

पत्थर की मूर्त्ति क्या शान्ति देगी, जब कि जीता जागता मनुष्य अपनी वाणी द्वारा दूसरे को शान्ति नहीं दे पाता। यह तो आधार है मनुष्य का जो उसे शान्ति दे सकेगा, देता आया है। जीवन में जब मनुष्य अनुभूति पाता है तो उसको यह मालूम हो जाता है कि आधार की आवश्यकता है। नौका चलती है। पानी का तो आधार है ही, किन्तु उसके साथ-साथ नाविक का भी आधार है। यदि नाविक ठीक से नौका न चलाये तो नौका का तो कोई दोष नहीं है। चलाने वाले नाविक का आधार ठीक है तो वह अवश्य ही नौका को गन्तव्य स्थान तक ले जायेगा। इसीलिये कहा गया आधार जीवन में जरुरी है।

लक्ष्य हीन जीवन - जीवन नहीं है। आवश्यकता है उमंग की, लक्ष्य की। मनुष्य का जीवन तो यूँ ही कुम्हलाया हुआ सा रहता है। आज मनुष्य के सामने इतनी अधिक समस्यायें हैं कि वह समझ ही नहीं पाता कि मैं इन समस्याओं का हल कैसे करूँ। उसके जीवन में कुछ समस्यायें तो ऐसी भी रहती हैं कि अन्तिम समय तक वह हल नहीं कर पाता किन्तु यदि उसने सही आधार ले रखा है तो उसके जीवन में सन्तोष, शान्ति जरुर रहेगी। उसके हृदय में यह सन्तोष अवश्य रहेगा कि आधार ने जहाँ तक मुझे योग्य समझा,

वहाँ तक मुझे पहुँचाया इसलिये असन्तोष करने की कोई बात ही नहीं रही मेरे लिये। बिना आधार, मनुष्य अपने जीवन काल में इस तरह की बात नहीं कह सकता, सन्तोष नहीं ले सकता।

ये जितनी बातें आपको प्रारम्भ से अब तक कही गयीं वह इसलिये कि जब हम सत्संगियों के मुख पर भी एक उदासी का भाव देखते हैं तो यह सोचते हैं कि इनका सत्संग में आना जाना है फिर भी अब तक इनको चिन्ता लगी हुयी है यह क्या बात है। लगता है इन्होंने अभी तक कोई सही आधार पकड़ा नहीं है। ये जीवन रूपी नौका को केवल यूँ ही चलाते हुये चले जा रहे हैं। इन लोगों ने ऐसे का आधार पकड़ रखा है जिनका खुद का कुछ आधार नहीं। पति, पत्नी, पुत्र, पुत्री, रिश्तेदार इनका आधार ले रखा है। ऐसे का आधार कैसे किसी को सन्तोष शान्ति दे सकेगा।

जिस व्यक्ति को जीवन बिताने की विधि मालूम होगी वही जीवन की सार्थकता समझ सकता है। कौन कहता है कि उपार्जन न किया जाये? उपार्जन नहीं किया जायेगा तो व्यय कैसे करेगा। उपार्जन करना तो एक आवश्यक अंग है किन्तु उपार्जन ही जीवन का लक्ष्य है जिसका, यह गलत। मनुष्य को यह सोचना पड़ेगा कि हम उपार्जन करके कहाँ पहुँचना चाहते हैं और यह उपार्जित वस्तु हमें कहाँ तक सुख दे सकती हैं।

कहते हैं कि मोहम्मद गजनी जब हिन्दुस्तान से सोना, चाँदी, हीरा, मोती लेकर के छ:सौ ऊँटों पर भर कर ले गया तो उसने अपने मुलाजिम, नौकर आदि से कहा कि इन सामान की एक प्रदर्शनी लगायी जाये। मैं देखना चाहता हूँ कि यह जो मैं छ: सौ ऊँटों पर जो सामान लाया हूँ आखिर ये मुझे

कहाँ तक शान्ति दे सकते हैं। प्रदर्शनी लगायी गयी, सारी वस्तुयें रखी गयीं – तमाम वस्तुओं को वह देखकर चला गया और कहने लगा कि यदि मुझे यह मालूम होता कि ये वस्तुयें मुझे सुख नहीं पहुँचा सकती तो मैं ये लूटपाट, डकैती, ये राहजनी, ये एक प्रकार लोगों को कष्ट देना, मैं यह सब कभी नहीं करता। अब मुझे यह अहसास हो रहा है कि ये इतना धन-वैभव भी मनुष्य को मानसिक शान्ति नहीं दे सकते। यह एक ऐतिहासिक बात है, काल्पनिक बात नहीं।

मैंने अब तक जो कुछ भी आपसे कहा, वह कल्पना के आधार पर कुछ भी नहीं कहा। ये जितनी बातें हैं सब मनुष्य के जीवन से सम्पर्क रखने वाली बातें हैं। सोचिये और समझिये। यह आपके लिये एक प्रश्न है कि आप सत्संग में जाते हैं उसमें उमंग का हिस्सा कितना है। आपने बस इतना ही समझ रखा है कि सत्संग में जाना बस इसी से अपना काम हो गया। भई यह तो अधूरी बात हुयी। सत्संग में आते हैं तो आपको यह समझना होगा कि हम उत्साह के साथ, उमंग के साथ, हम कुछ समझने के लिये, कुछ अपनाने के लिये, अपने जीवन को एक नया मोड़ देने के लिये आ रहे हैं। हमें अन्य बातों की तरफ ध्यान नहीं देना है। यहाँ काम करने वाले लोग कैसे हैं; यहाँ कैसे महँगे या सस्ते फूलों से श्रृंगार हुआ है इन सब बातों पर आपको ध्यान नहीं देना है। इन बातों पर ध्यान देने लगेंगे तो वहाँ भी एक नयी दुनिया पैदा हो जायेगी। उस नयी दुनिया से आपकी रक्षा हो इसीलिये आपसे कहा गया है, आप वहाँ जायें उमंग और उत्साह लेकर, आपको सत्संग का आनन्द लेना है। आप तो बस आनन्द लेकर आयें। अगल-बगल में क्या हो रहा है इससे आपको कोई मतलब नहीं। आपका सीधा सम्पर्क सत्संग से हो, उस प्रभु से हो।

यद्यपि आज मुझे इस विषय में और भी बहुत-सी बातें कहनी थी। किन्तु वक्त अभी कम है। आपने सत्संग का महत्व नहीं समझा है। सत्संग किस निमित्त है? इस सत्संग के द्वारा आपके जीवन में क्या परिवर्तन हो सकता है; इससे आपके जीवन का रूप किस तरह से विशेष रूप हो सकता है यह आप नहीं जान पाये। इसका कारण यही है मैं तो बस आपसे यही कहूँगा कि अभी तक आपने सत्संग का महत्व नहीं समझा है। अभी आपने केवल सत्संग सदन, इस स्थान को देखा है, सत्संग को नहीं देखा है। जिस दिन आप सत्संग को देखेंगे, समझेंगे, सत् के साथ संग ही सत्संग है इस बात को समझ पायेंगे; फिर तो जीवन में क्या प्राप्त होगा यह कहने की बात नहीं है आप खुद ही जान पायेंगे, अनुभव कर पायेंगे।

यह सत्संग आपको कितना आनन्द देने वाला है, कैसे आपके जीवन को बदल देने वाला है, कैसे अज्ञात से आपके प्रत्येक कार्य को ठीक करने वाला है यह आप यहाँ आकर, उस सन्त के भाव में विभोर होकर समझ सकेंगे। यह सन्त का सत्संग है। यह कोई व्यक्ति विशेष कोई सम्प्रदाय चलाने वाले किसी साधु का, किसी सन्त का सत्संग नहीं है। कबीर का भी एक मत है। कबीर पंथी भी है। इसी तरह से और भी बहुत पंथ चले हुये हैं लेकिन इसमें (सत्संग सदन) पंथी नहीं है। इसमें तो ग्रन्थी को हटा देना, किस तरह से हृदय में कुविचारों की जो गाँठ है उसे खोलकर जीवन को सरल बनाना इसी के लिये यह सत्संग है। बस।

❋ ❋ ❋